Subject – Hindi B

Reference - Class 10 - Hindi Grammar Course books

Name of the chapter –Samaas

Content – Definition, types and example of Samaas

Back exercises - To be done in the grammar course-book itself

Assignments to be done in Hindi note-book

3 समास

समास

'समास' शब्द का अर्थ है–संक्षिप्त करने की विधि। दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से नया सार्थक शब्द बनाने की प्रक्रिया को **'समास'** कहते हैं। इस प्रकार बनने वाले शब्द 'सामासिक शब्द' या 'समस्तपद' कहलाते हैं। समस्त-पद बनाते समय दोनों शब्दों के बीच की विभक्तियाँ, **अन्य शब्द** या **योजक** आदि का लोप हो जाता है। समस्तपद बनाते समय संज्ञा के साथ संज्ञा का, संज्ञा के साथ विशेषण का और अव्यय के साथ संज्ञा का मेल होता है। समस्तपद के पहले पद को **'पूर्व पद'** और दूसरे पद को **'उत्तर पद'** कहा जाता है।

पूर्व पद		उत्तर पद		समस्तपद	पूर्व पद		उत्तर पद		समस्तपद
देश	(का)	भक्त	=	देशभक्त	सिर	(में)	दर्द	=	सिरदर्द

समास-विग्रह

समस्तपदों को अलग-अलग करने की प्रक्रिया को 'समास-विग्रह' कहते हैं।

उदाहरण–

सामासिक शब्द		समास-विग्रह
रसोईघर	–	रसोई के लिए घर
निडर	–	न डर
रात-दिन	–	रात और दिन

संधि एवं समास में अंतर

संधि और समास में मुख्य अंतर यह है कि संधि में **वर्णों** का मेल होता है और समास में **शब्दों** (पदों) का मेल होता है। संधियुक्त शब्द को अलग करने की प्रक्रिया **'संधि-विच्छेद'** कहलाती है, जबकि समास के पदों को अलग करने की क्रिया को **'विग्रह'** कहते हैं।

जैसे–

हिमालय = हिम् + आलय] संधि-विच्छेद
अ + आ]

हिमालय = हिम का आलय समास-विग्रह

समास के भेद

समास के छह भेद होते हैं।

तत्पुरुष समास
- कर्म तत्पुरुष
- करण तत्पुरुष
- संप्रदान तत्पुरुष
- अपादान तत्पुरुष
- संबंध तत्पुरुष
- अधिकरण तत्पुरुष
- नञ् तत्पुरुष

इसमें द्वितीयपद प्रधान होता है। कारक के विभक्ति चिह्नों का लोप

कर्मधारय समास
- दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य अथवा विशेष्य-विशेषण का संबंध
- दोनों पदों में उपमान-उपमेय अथवा उपमेय-उपमान का संबंध

अव्ययीभाव समास
- प्रथम पद प्रधान
- समस्तपद वाक्य में क्रियाविशेषण का कार्य करता है।
- समस्तपद लिंग, विभक्ति तथा वचन से मुक्त।

बहुव्रीहि समास
- समास में प्रयुक्त पदों के अर्थ से भिन्न किसी अन्य तथा विशेष अर्थ की प्रधानता।
- दोनों पदों में कोई भी पद प्रधान नहीं होता है।

द्विगु समास
- पहला पद संख्यावाची और दूसरा पद संज्ञा
- प्रथम पद दूसरे पद के समाहार के रूप में प्रयुक्त होता है।

द्वंद्व समास
- दोनों पद प्रधान होते हैं।
- दोनों पदों का विग्रह (और, या, अथवा, एवं) शब्दों द्वारा।
- दूसरे पद के लिंग से क्रिया का निर्धारण।
- समुच्चयबोधक अव्यय शब्दों का लोप।

तत्पुरुष समास

तत्पुरुष समास में दूसरा पद (उत्तर पद) प्रधान होता है। समास-प्रक्रिया में दोनों पदों के बीच की विभक्तियों का लोप हो जाता है **जैसे–**

स्वर्गप्राप्त	=	स्वर्ग को प्राप्त	शोकाकुल	=	शोक से आकुल
तुलसीकृत	=	तुलसी द्‌वारा कृत	पाठशाला	=	पाठ के लिए शाला
ऋणमुक्त	=	ऋण से मुक्त	जलधारा	=	जल की धारा
लोकसभा	=	लोक की सभा	हवन-सामग्री	=	हवन के लिए सामग्री

इस समास में कर्ता और संबोधन कारकों के अलावा शेष कारकों की विभक्ति **पूर्व पद** और **उत्तर पद** के मध्य लुप्त रहती है इसमें जिस कारक की विभक्ति होती है, उसी के नाम पर तत्पुरुष का नामकरण होता है।

तत्पुरुष समास के उदाहरण

(*i*) **कर्म तत्पुरुष :** जहाँ पूर्वपद में कर्म कारक की विभक्ति 'को' का लोप होता है, वहाँ कर्म तत्पुरुष समास होता है। नीचे दिए गए उदाहरण देखिए–

समस्तपद	**विग्रह**
स्वर्गगत	स्वर्ग को गत (गया हुआ)
ग्रामगत	ग्राम को गत
यशप्राप्त	यश को प्राप्त

(*ii*) **करण तत्पुरुष :** जहाँ पूर्वपद में करण कारक की विभक्ति 'से' या 'के द्‌वारा' का लोप हो, वहाँ करण तत्पुरुष समास होता है। नीचे दिए गए उदाहरण देखिए–

समस्तपद	**विग्रह**	**समस्तपद**	**विग्रह**
तुलसीकृत	तुलसी द्‌वारा कृत	अकालपीड़ित	अकाल से पीड़ित
भुखमरा	भूख से मरा	गुणयुक्त	गुणों से युक्त
मनमाना	मन से माना	शक्तिसंपन्न	शक्ति से संपन्न
मनगढ़ंत	मन से गढ़ा हुआ	भयाकुल	भय से आकुल
रोगग्रस्त	रोग से ग्रस्त	हस्तलिखित	हाथ से लिखित

(*iii*) **संप्रदान तत्पुरुष :** जहाँ समास के पूर्वपद में संप्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए' का लोप हो जाता है, वहाँ संप्रदान तत्पुरुष समास होता है। नीचे दिए गए उदाहरण देखिए–

समस्तपद	**विग्रह**	**समस्तपद**	**विग्रह**
देशभक्ति	देश के लिए भक्ति	विद्‌यालय	विद्‌या के लिए आलय
गुरुदक्षिणा	गुरु के लिए दक्षिणा	यज्ञशाला	यज्ञ के लिए शाला
प्रयोगशाला	प्रयोग के लिए शाला	सत्याग्रह	सत्य के लिए आग्रह
युद्‌धभूमि	युद्‌ध के लिए भूमि	हवनसामग्री	हवन के लिए सामग्री
राहखर्च	राह के लिए खर्च	आरामकुर्सी	आराम के लिए कुर्सी

(*iv*) **अपादान तत्पुरुष :** जहाँ समास के पूर्वपद में अपादान कारक की विभक्ति 'से' का लोप हो, वहाँ अपादान तत्पुरुष होता है। नीचे दिए गए उदाहरण देखिए–

समस्तपद	**विग्रह**	**समस्तपद**	**विग्रह**
धनहीन	धन से हीन	पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट
रोगमुक्त	रोग से मुक्त	जन्मांध	जन्म से अंधा
धर्मविमुख	धर्म से विमुख	देशनिकाला	देश से निकाला
गुणहीन	गुणों से हीन	भयभीत	भय से भीत
धर्मभ्रष्ट	धर्म से भ्रष्ट	ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त

(v) **संबंध तत्पुरुष :** जहाँ समास के पूर्वपद में संबंध कारक की विभक्तियों 'का', 'की', 'के' का लोप हो, वहाँ संबंध तत्पुरुष होता है। नीचे दिए गए उदाहरण देखिए–

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
अमृतधारा	अमृत की धारा	जलधारा	जल की धारा
गंगातट	गंगा का तट	उद्योगपति	उद्योगों का पति
देशवासी	देश का वासी	राजकुमारी	राजा की कुमारी
पूँजीपति	पूँजी का पति	लखपति	लाखों का पति
मृत्युदंड	मृत्यु का दंड	सेनानायक	सेना का नायक
धर्मानुसार	धर्म के अनुसार	आज्ञानुसार	आज्ञा के अनुसार
राजमाता	राजा की माता	रामभक्ति	राम की भक्ति

(vi) **अधिकरण तत्पुरुष :** जहाँ अधिकरण कारक की विभक्तियों 'में', 'पर' का लोप हो, वहाँ अधिकरण तत्पुरुष होता है। नीचे दिए गए उदाहरण देखिए–

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
सरदर्द	सर में दर्द	आपबीती	आप पर बीती
युद्धवीर	युद्ध में वीर	घुड़सवार	घोड़े पर सवार
गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश	आत्मविश्वास	आत्म पर विश्वास
आनंदमग्न	आनंद में मग्न	कार्यकुशल	कार्य में कुशल
नीतिनिपुण	नीति में निपुण	पुरुषोत्तम	पुरुषों में उत्तम

(vii) **नञ् तत्पुरुष :** जिस समस्त पद में पहला पद नकारात्मक (निषेधात्मक) हो, उसे नञ् तत्पुरुष कहते हैं। यहाँ निषेध के अर्थ में 'अ' या 'अन्' उपसर्ग का प्रयोग होता है।

जैसे–

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
असत्य	न सत्य	अनाथ	न नाथ
अनादर	न आदर	अन्याय	न न्याय
अनादि	न आदि	अनंत	न अंत
अयोग्य	न योग्य	अधर्म	न धर्म

कर्मधारय समास

जिस सामासिक शब्द का उत्तर पद प्रधान हो तथा पूर्व पद एवं उत्तर पद में विशेषण-विशेष्य अथवा उपमान-उपमेय का संबंध हो, वह 'कर्मधारय समास' कहलाता है।

जैसे–

नरसिंह	=	नर रूपी सिंह	अंधकूप	=	अंधा है जो कूप
कमलनयन	=	कमल के समान नयन	देहलता	=	देह रूपी लता
महाविद्यालय	=	महान है जो विद्यालय	चंद्रमुख	=	चंद्र (चंद्रमा) के समान मुख
स्त्रीरत्न	=	स्त्री रूपी रत्न	दुरात्मा	=	बुरी है जो आत्मा

कर्मधारय समास दो प्रकार से होता है–

(क) जब पहला पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य हो, **जैसे**–नीलगगन, यहाँ पहला पद 'नील' विशेषण है और दूसरा पद 'गगन' विशेष्य।

(ख) जब एक पद उपमान और दूसरा पद उपमेय हो, **जैसे**–नरसिंह, यहाँ 'नर' उपमेय है और 'सिंह' उपमान।

कर्मधारय समास के उदाहरण

(*i*) विशेषण–विशेष्य

समस्तपद	पहला पद (विशेषण)	दूसरा पद (विशेष्य)	विग्रह
नीलगगन	नील	गगन	नीला है जो गगन
नीलगाय	नील	गाय	नीली है जो गाय
अधपका	आधा	पका	आधा है जो पका
दुरात्मा	दुर्	आत्मा	दुर् (बुरी) है जो आत्मा
महापुरुष	महा	पुरुष	महान है जो पुरुष
परमानंद	परम	आनंद	परम है जो आनंद
कृष्णसर्प	कृष्ण	सर्प	कृष्ण (काला) है जो सर्प
दुश्चरित्र	दुस्	चरित्र	दुस् (बुरा) है जो चरित्र
नीलकमल	नील	कमल	नीला है जो कमल
नीलांबर	नील	अंबर	नीला है जो अंबर
प्रधानाचार्य	प्रधान	आचार्य	प्रधान है जो आचार्य
महाराजा	महा	राजा	महान है जो राजा
सद्धर्म	सद्	धर्म	सत् है जो धर्म

(*ii*) विशेष्य–विशेषण

समस्तपद	पहला पद (विशेष्य)	दूसरा पद (विशेषण)	विग्रह
नराधम	नर	अधम	नरों में अधम है जो
पुरुषोत्तम	पुरुष	उत्तम	पुरुषों में उत्तम है जो

(*iii*) दोनों पद विशेषण

समस्तपद	पहला पद (विशेषण)	दूसरा पद (विशेषण)	विग्रह
खटमिट्ठा	खट्टा	मीठा	खट्टा और मीठा है जो
लाल-पीला	लाल	पीला	लाल और पीला है जो

(*iv*) उपमेय और उपमान

समस्तपद	पहला पद (उपमेय)	दूसरा पद (उपमान)	विग्रह
ग्रंथरत्न	ग्रंथ	रत्न	ग्रंथ रूपी रत्न
वचनामृत	वचन	अमृत	वचन रूपी अमृत
नरसिंह	नर	सिंह	नर रूपी सिंह
देहलता	देह	लता	देह रूपी लता
क्रोधाग्नि	क्रोध	अग्नि	क्रोध रूपी अग्नि
चरणकमल	चरण	कमल	चरण रूपी कमल

(*v*) उपमान–उपमेय

समस्तपद	पहला पद (उपमान)	दूसरा पद (उपमेय)	विग्रह
कमलनयन	कमल	नयन	कमल के समान नयन
घनश्याम	घन	श्याम	घन (बादल) के समान श्याम
कनकलता	कनक	लता	कनक के समान लता
मृगलोचन	मृग	लोचन	मृग के समान लोचन
चंद्रमुख	चंद्र	मुख	चंद्रमा के समान मुख

अव्ययीभाव समास

'अव्ययीभाव समास' के पूर्वपद में प्रधानता होती है और सामासिक पद अव्यय हो जाता है। अव्यय का अर्थ क्रियाविशेषण से है। पहला पद मूलतः उपसर्ग पाया जाता है, दूसरे और अंतिम पद से जुड़कर यह अव्यय अर्थात् क्रियाविशेषण हो जाता है। हिंदी शब्दों (संस्कृत छोड़कर) में पहला पद संज्ञा या विशेषण भी कहीं-कहीं आता है, किंतु समस्तपद क्रियाविशेषण ही बनता है। जैसे– दिनोंदिन, घर-घर, हरघड़ी। ऐसे द्विरुक्त शब्दों के विग्रह में पहला पद उपसर्ग ही दिखाई देता है। जैसे– हर घर, हर दिन, हर घड़ी।

अव्ययीभाव समास युक्त पाए जाने वाले शब्दों के दो रूप सामने आते हैं।

(*i*) इनमें पहला पद उपसर्ग होता है, **जैसे–** बेखटके, यथाशक्ति।

(*ii*) इस रूप में पहला पद विशेषण या संज्ञा होता है, **जैसे**– हर-घड़ी और दिन-दिन। यहाँ द्विरुक्त रूप अधिक मिलता है।

अव्ययीभाव समास का विग्रह करते हुए कहीं-कहीं बहुव्रीहि समास बन जाता है, किंतु इसका सामासिक शब्द इसकी विशेषता के अनुसार क्रियाविशेषण ही होता है।

जैसे–

निडर–बिना डर के – अव्ययीभाव समास

निडर–डर नहीं है जिसे – बहुव्रीहि समास

एक और विकल्प अव्ययीभाव समास में पाया गया है, जहाँ 'नि' और 'अन' उपसर्ग से बना सामासिक पद विशेषण बनता है, **जैसे–** अनजान, निडर आदि। सभी सामासिक शब्द अव्यय नहीं होते, किंतु विशेषण बनने वाले सामासिक शब्द संख्या में अपेक्षाकृत बहुत कम ही होंगे।

अव्ययीभाव समास के उदाहरण

समस्तपद		विग्रह	समस्तपद		विग्रह
आजन्म	–	जन्म भर	अभूतपूर्व	–	पहले न हुआ (विशेषण)
प्रतिदिन	–	हर दिन	बेकाम	–	काम के बिना
यथाशक्ति	–	शक्ति के अनुसार	बेईमान	–	ईमान के बिना (विशेषण)
यथाक्रम	–	क्रम के अनुसार	बेखटके	–	खटके के बिना
अनुरूप	–	रूप जैसा	दिनोंदिन	–	दिन ही दिन में
यथासंभव	–	जितना संभव हो सके	हाथोंहाथ	–	हाथ ही हाथ में
अकारण	–	कारण के बिना	धीरे-धीरे	–	बहुत धीरे
आमरण	–	मरण तक	घर-घर	–	हर घर
पहले-पहल	–	सबसे पहले	बेफ़ायदा	–	फ़ायदे के बिना
रातोंरात	–	रात ही रात में	प्रत्युपकार	–	उपकार के प्रति
घड़ी-घड़ी	–	हर घड़ी	निर्भय	–	भय के बिना
पल-पल	–	हर पल	यथाशीघ्र	–	जितना शीघ्र हो सके
बीचोंबीच	–	ठीक बीच में/बीच ही बीच में	भरपेट	–	पेट भर कर
साथ-साथ	–	एक साथ	बेकाम	–	काम के बिना
प्रतिदिन	–	हर दिन	बख़ूबी	–	ख़ूबी के साथ
डाल-डाल	–	एक डाल से दूसरी डाल	प्रत्येक	–	हर एक
धड़ा-धड़	–	धड़-धड़	निधड़क	–	धड़क के बिना
दिन-दिन	–	हर दिन	बेलगाम	–	लगाम के बिना
व्यर्थ	–	अर्थ के बिना	मनमाना	–	मन के अनुसार
यथाशक्ति	–	शक्ति के अनुसार	बाकायदा	–	कायदे के अनुसार
यथाविधि	–	विधि के अनुसार	असंगत	–	संगत के बिना
यथासाध्य	–	साध्य के अनुसार	अनाथ	–	नाथ के बिना
यथार्थ	–	अर्थ के अनुसार	यथाकारण	–	कारण के अनुसार

बहुव्रीहि समास

समास में आए पदों के अर्थ को छोड़कर जहाँ किसी अन्य विशेष अर्थ की प्रधानता हो, वहाँ 'बहुव्रीहि समास' होता है। इसके दोनों पदों में कोई भी पद प्रधान नहीं होता। दोनों पदों का सामासिक शब्द अपने से अलग किसी तीसरे पद का विशेषण बन जाता है।
जैसे–

'नीलकंठ'– नीला है कंठ जिसका अर्थात शिवजी।

बहुव्रीहि समास के पदों के विग्रह में यदि पहला पद विशेषण के रूप में आ जाए, तब वह कर्मधारय समास कहलाएगा **जैसे–** नीलकंठ–नीला (विशेषण) कंठ (विशेष्य) कर्मधारय समास। इसका अर्थ हुआ कि समास का नाम उसके विग्रह के अनुसार ही देना होगा। इस विग्रह से सामासिक रूप के अर्थ में अंतर आ जाएगा। कर्मधारय समास में सामान्य अर्थ होगा और बहुव्रीहि समास में अलग विशेष अर्थ होगा, **जैसे–**

पीतांबर	– पीला (विशेषण) अंबर (वस्त्र) [पीला है जो अंबर (वस्त्र)]	– कर्मधारय समास
पीतांबर	– पीला अंबर (वस्त्र) है जिसका अर्थात् विष्णु	– बहुव्रीहि समास

बहुव्रीहि समास के उदाहरण

चतुर्भुज	–	चार भुजाएँ है जिसकी	अर्थात	(विष्णु)
गोपाल	–	गो (गायों) का पालन करे जो	अर्थात	(कृष्ण)
दशानन	–	दस आनन हैं जिसके	अर्थात	(रावण)
दशमुख	–	दस मुख हैं जिसके	अर्थात	(रावण)
पीतांबर	–	पीला है अंबर (वस्त्र) जिसका	अर्थात	(विष्णु)
नीलकंठ	–	नीला है कंठ जिसका	अर्थात	(शिव)
लंबोदर	–	लंबा है उदर जिसका	अर्थात	(गणेश)
वीणापाणि	–	वीणा है पाणि (हाथ) में जिसके	अर्थात	(सरस्वती)
चंद्रभाल	–	चंद्र है भाल (मस्तक) पर जिसके	अर्थात	(शिव)
चंद्रशेखर	–	चंद्र है शिखर पर जिसके	अर्थात	(शिव)
चक्रधर	–	चक्रधारण करता है जो	अर्थात	(विष्णु)
चतुर्मुख	–	चार हैं मुख जिसके	अर्थात	(ब्रह्मा)
त्रिलोचन	–	तीन हैं नेत्र जिसके	अर्थात	(शिव)
मुरलीधर	–	मुरली को धारण करने वाले	अर्थात	(कृष्ण)
गजानन	–	गज के समान आनन है जिसका	अर्थात	(गणेश)
त्रिनेत्र	–	तीन नेत्र हैं जिसके	अर्थात	(शिव)
अंशुमाली	–	अंशुओं (किरणों) की माला रखने वाला	अर्थात	(सूर्य)
अष्टभुजा	–	आठ भुजाओं वाली	अर्थात	(दुर्गा)
चक्रपाणि	–	चक्र है पाणि (हाथ) में जिसके	अर्थात	(कृष्ण)
एकदंत	–	एक है दाँत जिसका	अर्थात	(गणेश)
पवनसुत	–	पवन का पुत्र है जो	अर्थात	(हनुमान)
सिंहवाहिनी	–	सिंह है वाहन जिसका	अर्थात	(दुर्गा)
हलधर	–	हल को धारण करने वाला	अर्थात	(बलराम)
अष्टावक्र	–	आठ वक्र हैं जिसके शरीर में	अर्थात	(एक ऋषि)

कभी-कभी बहुव्रीहि समास में विशेष अर्थ तो होता है, पर वहाँ विशेष नाम नहीं होता। ऐसे कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं–

मिठबोला	–	मीठी है बोली जिसकी	अर्थात	(ऐसा पुरुष)
सतखंडा	–	सात है खंड जिसमें	अर्थात	(ऐसा महल)
शांतिप्रिय	–	शांति प्रिय है जिसे	अर्थात	(ऐसा व्यक्ति)

सपरिवार	–	परिवार के साथ है जो	अर्थात	(ऐसा व्यक्ति)
बेरहम	–	नहीं है रहम जिसमें	अर्थात	(ऐसा व्यक्ति)
निर्जन	–	नहीं हैं जन जहाँ	अर्थात	(ऐसा स्थान)
सबल	–	बल के साथ है जो	अर्थात	(ऐसा व्यक्ति)
कनकटा	–	कान है कटा जिसका	अर्थात	(ऐसा पुरुष)

विशेष– बहुव्रीहि समास के जिस समस्तपद का विशेष नाम नहीं होता, उसके आगे अर्थात ..... लिखना आवश्यक नहीं है। यहाँ केवल समझाने के लिए इस प्रकार लिखा गया है।

द्विगु समास

द्विगु समास का पहला पद संख्यावाचक होता है और यह दूसरे पद के समाहार के रूप में प्रस्तुत होता है। इस समाहार के विग्रह के कारण ही यह बहुव्रीहि समास से भिन्न हो जाता है।

जैसे–

दशानन	– दस आनन का समूह	–	द्विगु समास
	– दस आनन हैं जिसके अर्थात रावण	–	बहुव्रीहि समास
तिरंगा	– तीन रंगों का समाहार	–	द्विगु समास
	– तीन रंगों वाला अर्थात भारत का राष्ट्रध्वज	–	बहुव्रीहि समास

द्विगु समास के उदाहरण

त्रिलोक	–	तीन लोकों का समाहार	सप्तपुर	–	सात पवित्र नगरों का समाहार
त्रिभुवन	–	तीन भुवनों का समाहार	सप्तशती	–	सात सौ का समूह
पंचवटी	–	पाँच वटों का समूह	सतसई	–	सात सौ छंदों का समूह
अष्टाध्यायी	–	आठ अध्यायों का समाहार	सप्तक	–	सात स्वरों का समूह
चौमासा	–	चार मासों का समाहार	सप्तर्षि	–	सात ऋषियों का समूह
त्रिवेणी	–	तीन वेणियों (धाराओं) का समूह	सप्ताह	–	सात दिनों का समूह
पंचकन्या	–	पाँच कन्याओं का समूह	दुअन्नी	–	दो आनों का समाहार
पंचतत्त्व	–	पाँच तत्वों का समूह	अठन्नी	–	आठ आनों का समूह
पंचदेव	–	पाँच देवों का समूह	चवन्नी	–	चार आनों का समूह
पंचवाण	–	पाँच वाणों का समूह	नवरात्र	–	नौ रातों का समाहार
पंचामृत	–	पाँच पदार्थों का समाहार	चतुर्भुज	–	चार भुजाओं का समाहार
त्रयी	–	तीन पदार्थों का समाहार	द्विपद	–	दो पदों का समाहार
त्रिकोण	–	तीन कोणों का समाहार	अष्टादशांग	–	अठारह औषधियों का समाहार
त्रिभुज	–	तीन भुजाओं का समाहार	चतुष्कोण	–	चार कोनों का समूह
त्रिफला	–	तीन फलों का समाहार	नवनिधि	–	नौ निधियों का समाहार

द्वंद्व समास

द्वंद्व समास के दोनों पद प्रधान होते हैं। इन दोनों पदों का विग्रह 'और', 'या', 'अथवा', 'एवं' शब्दों के माध्यम से होता है। दूसरे पद के लिंग से क्रिया का निर्धारण किया जाता है। दोनों पद कभी एक जैसे पदार्थ के होते हैं और कभी विपरीत भावार्थ लिए हुए होते हैं। जहाँ दोनों पद विशेषण हों और एक ही भाव या विचार को प्रस्तुत करते हों, वहाँ द्वंद्व समास नहीं होता।

जैसे–

(*i*) यहाँ तो सब <u>अंधे-बहरे</u> हैं।

(*ii*) <u>लँगड़ा-लूला</u> व्यक्ति यह काम नहीं कर सकता।

यहाँ रेखांकित शब्दों में द्वंद्व समास नहीं है। इनका तात्पर्य समान व्यक्तियों के एक ही भाव अर्थात् अकर्मण्य व्यक्तियों और असमर्थ व्यक्तियों से है।

द्विगु समास के उदाहरण

दाल-रोटी	–	दाल और रोटी	बेटा-बेटी	–	बेटा और बेटी
माता-पिता	–	माता और पिता	हरि-शंकर	–	हरि और शंकर
राम-लक्ष्मण	–	राम और लक्ष्मण	देवासुर	–	देव और असुर
पाप-पुण्य	–	पाप और पुण्य	राधा-कृष्ण	–	राधा और कृष्ण
भला-बुरा	–	भला और बुरा	धनुर्बाण	–	धनुष और बाण
चूहा-बिल्ली	–	चूहा और बिल्ली	शिव-पार्वती	–	शिव और पार्वती
ऋषि-मुनि	–	ऋषि और मुनि	घर-आँगन	–	घर और आँगन
भाई-बहन	–	भाई और बहन	कपड़ा-लत्ता	–	कपड़ा और लत्ता
माँ-बाप	–	माँ और बाप	देश-विदेश	–	देश और विदेश
गाय-बैल	–	गाय और बैल	सीता-राम	–	सीता और राम
भीमार्जुन	–	भीम और अर्जुन	लाभालाभ	–	लाभ और अलाभ

विभिन्न समासों में अंतर

विग्रह के आधार पर समासों के नाम दिए जाते हैं। विग्रह से ही उनके अर्थ में परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। अर्थ के इस अंतर के आधार पर ही सामासिक शब्द के समास का नाम निर्धारित किया जाता है।

(क) तत्पुरुष, कर्मधारय और बहुव्रीहि में अंतर

पीतांबर	– पीला है जो अंबर	– कर्मधारय
	– पीला अंबर है जिसका अर्थात विष्णु	– बहुव्रीहि
नीलकंठ	– नीला है जो कंठ	– कर्मधारय
	– नीला है कंठ जिसका अर्थात शिव	– बहुव्रीहि
अंशुमाली	– सूर्य की किरणों की माला	– संबंध तत्पुरुष
	– अंशुओं की माला पहनता है जो अर्थात सूर्य	– बहुव्रीहि
मृत्युंजय	– मृत्यु पर जीत	– अधिकरण तत्पुरुष
	– मृत्यु पर विजय प्राप्त करने वाला अर्थात भीष्म या शिव	– बहुव्रीहि
घनश्याम	– श्याम (काला) है जो घन	– कर्मधारय
	– घन के समान है श्याम जो अर्थात कृष्ण	– बहुव्रीहि

(ख) द्विगु और बहुव्रीहि में अंतर–

दशानन	– दश आनन	– द्विगु समास
	– दस आनन हैं जिसके अर्थात् रावण	– बहुव्रीहि
त्रिनेत्र	– तीन नेत्र	– द्विगु समास
	– तीन नेत्र है जिसके अर्थात् शिव	– बहुव्रीहि
चतुर्मुखी	– चार मुख	– द्विगु
	– चार मुख हैं जिसके अर्थात् ब्रह्मा	– बहुव्रीहि
तिरंगा	– तीन रंगों का समाहार	– द्विगु
	– तीन रंग हैं जिसके अर्थात् भारतीय ध्वज	– बहुव्रीहि

अभ्यास-कार्य

निम्नलिखित समास-विग्रहों के समस्तपदों को लिखिए तथा उनके समास का नाम भी बताइए–

(*i*) भला और बुरा (*ii*) सौ सालों का समूह (*iii*) नीला है जो कमल

(*iv*) दश आननों का समूह (*v*) दस हैं आनन (मुँह) जिसके अर्थात् रावण

(*vi*) देखते ही देखते (*vii*) न सफल (*viii*) पथ से भ्रष्ट

. निम्नलिखित समस्तपदों का समास-विग्रह कीजिए तथा समास का नाम लिखिए–

(*i*) पीतांबर (*ii*) जपमाला (*iii*) प्रतिक्षण (*iv*) सुबह-शाम

(*v*) देशभक्ति (*vi*) घुड़सवार (*vii*) विचारमग्न (*viii*) दुख-ताप

अभ्यास-कार्य

समास को अपने शब्दों में परिभाषित कीजिए।

समस्त पद किसे कहा जाता है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

पूर्वपद तथा उत्तरपद से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

समास-विग्रह से आप क्या समझते हैं? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

समास के कितने भेद होते हैं? उनके नाम लिखें।

तत्पुरुष समास को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

निम्नलिखित समस्तपदों का विग्रह कीजिए तथा उनके समास का नाम बताइए।

(*i*) गुरुदक्षिणा (*ii*) रेखांकित (*iii*) करकमल (*iv*) अंधकूप

(*v*) श्वेतांबरा (*vi*) हाथोंहाथ (*vii*) दोपहर (*viii*) पूजा-अर्चना